Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC)

प्राचीन भारत

(उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ सहित)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: UPP02

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC)

प्राचीन भारत

(उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ सहित)

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

UPPCS DLP विषय सूची (Contents)

1.	**प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत**	**7-14**
	1.1 पुरातात्त्विक स्रोत	9
	1.2 साहित्यिक स्रोत	11
	1.3 विदेशी यात्रियों के वृत्तांत/विवरण	12
2.	**पाषाणयुगीन संस्कृति**	**15-21**
	2.1 पुरापाषाण काल	15
	2.2 मध्यपाषाण काल	16
	2.3 नवपाषाण काल : कृषि और पशुपालन	18
3.	**सिंधु घाटी सभ्यता**	**22-33**
	3.1 सैंधव सभ्यता का भौगोलिक विस्तार	22
	3.2 सैंधव सभ्यता का नगर नियोजन	23
	3.3 सैंधव सभ्यता की आर्थिक व्यवस्था	25
	3.4 सैंधव सभ्यता में धार्मिक जीवन	26
	3.5 सैंधव सभ्यता का सामाजिक जीवन	26
	3.6 सैंधव सभ्यता में प्रौद्योगिकी, कला एवं शिल्प	27
	3.7 हड़प्पा सभ्यता या सैंधव सभ्यता का पतन	28
	3.8 ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियाँ	29
4.	**वैदिक काल**	**34-46**
	4.1 ऋग्वैदिक काल : 1500-1000 ई.पू.	34
	4.2 उत्तर–वैदिक काल : 1000–600 ई.पू.	39

5. छठी शताब्दी ई.पू. का भारत **47-60**

5.1 सामाजिक-धार्मिक आंदोलन के कारण 47

5.2 जैन धर्म 48

5.3 गौतम बुद्ध और बौद्ध धर्म 49

5.4 महाजनपद तथा मगध का उत्थान 53

5.5 ईरानी और मकदूनियाई आक्रमण 56

6. मौर्य काल **61-75**

6.1 अध्ययन के स्रोत 61

6.2 चंद्रगुप्त मौर्य एवं बिंदुसार 61

6.3 अशोक 63

6.4 मौर्य साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था 66

6.5 मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था 68

6.6 मौर्यकालीन समाज 69

6.7 मौर्यकालीन कला 69

6.8 मौर्य साम्राज्य का पतन 70

7. मौर्योत्तर काल **76-86**

7.1 मौयोत्तरकालीन प्रमुख राजवंश 76

7.2 हिन्द-यवन या बैक्ट्रियाई आक्रमण 78

7.3 शक एवं पहलव शासक 79

7.4 कुषाण वंश 80

7.5 मौर्योत्तरकालीन राजव्यवस्था एवं प्रशासन 80

7.6 मौर्योत्तरकालीन समाज 81

7.7 मौर्योत्तरकालीन अर्थव्यवस्था 82

7.8 मौर्योत्तरकालीन कला एवं साहित्य 83

8. संगम काल **87-92**

8.1 संगम साहित्य 87

8.2 राजनैतिक इतिहास 88

8.3 संगमकालीन शासन व्यवस्था 89

8.4 संगमकालीन सामाजिक व्यवस्था 90

8.5 संगमकालीन अर्थव्यवस्था 90

9. गुप्त साम्राज्य **93-104**

9.1 गुप्त राजवंश के इतिहास के स्रोत 93

9.2 प्रारंभिक शासक 93

9.3 गुप्त साम्राज्य के अन्तर्गत प्रशासन 95

9.4 गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था 97

9.5 गुप्तकालीन समाज एवं धार्मिक जीवन 98

9.6 गुप्तकालीन साहित्य 99

9.7 गुप्तकालीन विज्ञान और प्रौद्योगिकी 99

9.8 गुप्तकालीन कला और स्थापत्य 100

10. गुप्तोत्तर काल **105-116**

10.1 प्रमुख राजवंश 105

10.2 थानेश्वर का पुष्यभूति (वर्द्धन) वंश 106

10.3 चालुक्य वंश 108

10.4 पल्लव राजवंश 111

10.5 कुछ अन्य प्रमुख राजवंश 114

11. पूर्व मध्यकालीन भारत **117-128**

11.1 कन्नौज के लिये त्रिपक्षीय संघर्ष 117

11.2 बंगाल का पाल राजवंश 118

11.3 गुर्जर-प्रतिहार वंश 119

11.4 राष्ट्रकूट राजवंश 120

11.5 चोल राजवंश 122

11.6 भारतीय सामंतवाद 126

अध्याय
1

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत (Sources of Ancient Indian History)

इतिहासकार एक वैज्ञानिक की भाँति उपलब्ध सामग्री की समीक्षा करके अतीत का सही चित्रण करने का प्रयास करता है। उसके लिये साहित्यिक सामग्री, पुरातात्त्विक साक्ष्य और विदेशी यात्रियों के यात्रा-वृत्तांत सभी का महत्त्व है। प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिये पूर्णत: शुद्ध ऐतिहासिक सामग्री विदेशों की अपेक्षा अल्प मात्रा में उपलब्ध है। यद्यपि भारत में यूनान के हेरोडोटस या रोम के लिवी जैसे इतिहासकार नहीं हुए, अत: कुछ पाश्चात्य विद्वानों की यह मानसिक धारणा बन गई थी कि भारतीयों को इतिहास की समझ ही नहीं थी। लेकिन, ऐसी धारणा बनाना भारी भूल होगी। वस्तुत: प्राचीन भारतीय इतिहास की संकल्पना आधुनिक इतिहासकारों की संकल्पना से पूर्णत: अलग थी। वर्तमान इतिहासकार ऐतिहासिक घटनाओं में कारण-कार्य संबंध स्थापित करने का प्रयास करते हैं लेकिन प्राचीन इतिहासकार केवल उन घटनाओं या तथ्यों का वर्णन करता था जिनमें आम जनमानस को कुछ सीखने को मिल सके। महाभारत में इतिहास की जो संकल्पना दी गई है उससे भारतीयों की इतिहास विषयक संकल्पना उद्भाषित होती है। महाभारत के अनुसार ऐसी प्राचीन लोकप्रिय कथा जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की व्यावहारिक शिक्षा मिल सके 'इतिहास' कहलाती है। प्राचीन युग में भारतीय, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों को जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक समझते थे। इसीलिये प्राचीन भारत का इतिहास राजनीतिक कम और सांस्कृतिक अधिक है। भारतीय इतिहासकारों का दृष्टिकोण पूर्णतया धर्मपरक था, किन्तु धर्म के अतिरिक्त अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक कारण थे जिन्होंने भारत में अनेक आंदोलनों, संस्थाओं और विचारधाराओं को जन्म दिया। अत: भारतीय इतिहास का सार्वभौमिक स्वरूप जानने के लिये इन तथ्यों का अध्ययन करना आवश्यक है।

आधुनिक इतिहासकारों ने इतिहास में केवल राजनीतिक तथ्यों का वर्णन करना ही अपना कर्त्तव्य नहीं समझा बल्कि उनके वर्णन में आम जनमानस भी उतना ही महत्त्व रखते हैं जितना कि सम्राटों अथवा साम्राज्यों के उत्थान और पतन। वह उन राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं बौद्धिक परिवर्तनों का विश्लेषण एवं अध्ययन करता है, जिनके द्वारा मनुष्य उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके अपने जीवनकाल को पूर्व की अपेक्षा अधिक सुखमय बनाने का प्रयत्न करता है। अत: प्रसिद्ध इतिहासकार कोसांबी के अनुसार, "उत्पादन के साधनों और उनके पारस्परिक संबंधों का तिथि क्रमानुसार अध्ययन करने से ही विकास के कालक्रम की विस्तृत जानकारी मिल सकती है।" उनके अनुसार, इसके आधार पर हम यह जान सकते हैं कि जनसाधारण किस प्रकार अपना जीवन-यापन करते थे।

भारतीय इतिहास के काल को तीन भागों में बाँटकर देखा जा सकता है– वह काल जिसके लिये कोई लिखित साधन उपलब्ध नहीं है और जिसमें मनुष्य का जीवन अपेक्षाकृत पूर्णत: सभ्य नहीं था, 'प्रागैतिहासिक काल' कहलाता है। इतिहासकार उस काल को 'ऐतिहासिक काल' का नाम देते हैं जिसके लिये लिखित साक्ष्य उपलब्ध हैं और जिसमें मनुष्य सभ्य बन गया था। प्राचीन भारतीय इतिहास में लिखित साधन उपलब्ध तो हैं लेकिन वे अस्पष्ट और गूढ़ लिपि में हैं जिनका अर्थ निकालना कठिन है। इस काल को भारतीय इतिहासकार आद्य ऐतिहासिक काल का इतिहास कहते हैं। सैंधव संस्कृति की गणना 'आद्य ऐतिहासिक काल' के अन्तर्गत की जाती है। इसी आधार पर हड़प्पा संस्कृति से पूर्व का भारतीय इतिहास 'प्रागैतिहासिक' और लगभग ईसा पूर्व 600 के बाद का इतिहास 'ऐतिहासिक काल' कहलाता है क्योंकि भारत में प्राचीनतम लिखित साक्ष्य अशोक के अभिलेख हैं जिनका काल ईसा से पूर्व तीसरी शताब्दी है और इस भाषा के विकास में भी लगभग 300 वर्ष लगे होंगे।

प्रागैतिहासिक काल का इतिहास लिखते समय इतिहासकार को पूर्णतया पुरातात्त्विक साक्ष्यों पर निर्भर रहना पड़ता है। आद्य इतिहास लिखते समय वह पुरातात्त्विक एवं साहित्यिक दोनों प्रकार के साधनों का उपयोग करता है तथा इतिहास लिखते समय वह इन दोनों साधनों के अतिरिक्त विदेशी लेखकों के वर्णनों का प्रयोग करता है। विदेशी यात्रियों के वर्णन भी साहित्यिक साधन हैं लेकिन उनकी उपयोगिता के विस्तृत वर्णन की आवश्यकता के कारण उनका वर्णन अलग शीर्षक के अंतर्गत किया गया है। इन सभी ऐतिहासिक साक्ष्यों का उपयोग करके इतिहासकार काल विशेष का ठीक-ठीक चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

अत: हम सुविधा के लिये भारतीय इतिहास को जानने के साधनों को तीन शीर्षकों में रख सकते हैं–

- पुरातत्त्व-संबंधी साक्ष्य।
- साहित्यिक साक्ष्य।
- विदेशी यात्रियों के विवरण।

(ख) चीनी यात्रियों के विवरण ***(Description by Chinese Travellers):*** चीनी यात्रियों में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण फाह्यान, ह्वेनसांग और इत्सिंग के वर्णन हैं। इनके वर्णन चीनी भाषा में अभी तक उपलब्ध हैं तथा इनके अंग्रेज़ी अनुवाद कर दिये गए हैं। फाह्यान 5वीं शती ईसवी में भारत आया था और 14 वर्ष भारत में रहा तथा उसने विशेष रूप से भारत में बौद्ध धर्म की स्थिति के विषय में लिखा। ह्वेनसांग हर्ष के शासनकाल में भारत आया था और वह 16 वर्ष भारत में रहा। ह्वेनसांग की यात्रा विवरण 'सि-यू-की' के नाम से प्रसिद्ध है। उसने धार्मिक अवस्था के साथ-साथ तत्कालीन राजनीतिक दशा का भी वर्णन किया है तथा उसने हर्ष, भास्कर वर्मन आदि के विषय में लिखा है। किंतु इनका दृष्टिकोण ज़्यादातर धार्मिक ही था, जिसका इनके वर्णन पर स्पष्टत: प्रभाव दिखाई पड़ता है। चीनी लेखक भारत का उल्लेख 'यिन-तु' के नाम से करते हैं। इसके अतिरिक्त मात्वालिन नामक चीनी यात्री ने चालुक्यों के शासनकाल में भारत चीन संबंधों का विवरण अपने यात्रा वृतांत में दिया है।

(ग) अरब यात्रियों के विवरण ***(Description by Arabian Travellers):*** अरब यात्रियों ने लगभग 8वीं शताब्दी से भारत के विषय में वर्णन करना शुरू कर दिया था। सुलेमान 9वीं शती ईसवी के मध्य भारत आया था तथा इसने पाल और प्रतिहार राजाओं के विषय में लिखा है। अल मसूदी 941 ई. से 943 ई. तक भारत में रहा। उसने राष्ट्रकूट राजाओं की महत्ता के विषय में लिखा है। अरब यात्रियों के विवरण में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान अबूरिहान का है। उसका दूसरा नाम अलबरूनी था। वह महमूद गजनवी का समकालीन था। उसने संस्कृत भाषा सीखी और भारत की सभ्यता एवं संस्कृति को पूर्ण रूप से जानने का प्रयत्न किया। उसका महत्त्वपूर्ण ग्रंथ तहकीक-उल-हिंद है और इसमें भारत का बहुत तर्कसंगत और पूर्ण वर्णन लिखा है। अलबरूनी ने भारतीय गणित, भौतिकी, रसायनशास्त्र, सृष्टिशास्त्र, ज्योतिष, भूगोल, दर्शन, धार्मिक क्रियाओं, रीति-रिवाजों और सामाजिक विचारधारा का महत्त्वपूर्ण वर्णन किया है।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि इतिहास लेखन में ग्रंथों, सिक्कों, अभिलेखों और पुरातत्त्व आदि से प्राप्त साक्ष्यों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आधुनिक इतिहासकार काल विशेष में संबंध रखने वाली साहित्यिक तथा पुरातात्त्विक सामग्री का उपयोग करके सही चित्र प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है। साहित्यिक स्रोतों का उपयोग करते समय वह उस काल की विचारधारा का ध्यान रखता है जिससे प्रेरित होकर लेखक ने अपने ग्रंथों की रचना की थी।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- द नेचुरल हिस्ट्री 'प्लिनी द एल्डर' की रचना है। द हिस्टरीज 'हेरोडोटस', जबकि लाइफ ऑफ ह्वेनसांग 'हुई-ली', वहीं हिस्टोरियल फिलिप्पिकल 'पाम्पेइस ट्रोगस' की रचना है।
- ऐहोल अभिलेख पुलकेशिन द्वितीय से संबंधित है।
- प्रयाग स्तंभलेख में समुद्रगुप्त की विजयों एवं नीतियों का वर्णन है।
- जूनागढ़ अभिलेख रूद्रदामन से संबंधित है।
- सिक्कों के अध्ययन को मुद्राशास्त्र (न्यूमिस्टेटिक्स) कहते हैं।
- कुषाणकालीन मूर्तियों पर वैदेशिक प्रभाव स्पष्टत: दिखाई पड़ता है।
- 'नागर' तथा 'द्रविड़' शैली के मिश्रित स्वरूप को बैसर शैली कहते हैं।
- अष्टाध्यायी पाणिनी की रचना है।
- वृहतकथामंजरी क्षेमेंद्र की रचना है।
- परिशिष्टपर्वन हेमचंद्र की रचना है।
- रघुवंशम् तथा मालविकाग्निमित्रम् कालिदास की रचना है।
- यूनानी लेखकों के ग्रंथों में "पेरिपल्स ऑफ दि एरिथियन सी" प्रमुख है।
- इंडिका मेगास्थनीज की रचना है, जिससे मौर्य प्रशासन की जानकारी मिलती है।
- सौंदरानंद अश्वघोष की रचना है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन सही सुमेलित नहीं है?
UPPCS (Mains) 2017
(a) कुमारगुप्त-1 : मंदसौर अभिलेख
(b) पत्तिक : तक्षशिला अभिलेख
(c) प्रभावती गुप्ता : उदयगिरी गुहा अभिलेख
(d) समुद्रगुप्त : एरण अभिलेख

2. सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिये तथा सूचियों को नीचे दिये गए कूट से सही उत्तर चुनिये।
UPPCS (Pre) 2017

सूची-I	सूची-II
A. गांधार कला	1. मिनेण्डर
B. जूनागढ़ शिलालेख	2. पत्तिक
C. मिलिन्दपन्हो	3. कुषाण
D. तक्षशिला अभिलेख	4. रूद्रदामन-I

कूट:

	A	B	C	D
(a)	1	3	4	2
(b)	2	4	3	1
(c)	3	4	1	2
(d)	2	1	3	4

3. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित नहीं हैं।
UP (RO/ARO) Pre 2017

(अभिलेख)		(शासक)
(a) नासिक	–	गौतमीपुत्र
(b) हाथी गुम्फा	–	खारवेल
(c) भितरी	–	पुल्केशिन द्वितीय
(d) गिरनार	–	रूद्रदामन

4. 'सि-यू-की' नामक यात्रा विवरण निम्नलिखित में से किससे जुड़ा है?
UPPCS (Mains) 2016
(a) फाह्यान (b) अलबरूनी
(c) मेगास्थनीज (d) ह्वेनसांग

5. कल्हण कृत राजतंरगिणी में कुल कितने तरंग हैं?
UPPCS (Mains) 2015
(a) आठ (b) नौ
(c) दस (d) ग्यारह

6. निम्नलिखित में से कौन-सा जोड़ा सही सुमेलित नहीं है?
UPPCS (Pre) 2015
(a) लाइफ ऑफ ह्वेनसांग : हुई-ली
(b) द नैचुरल हिस्ट्री : टॉलमी
(c) हिस्टोरियल फिलिप्पिकल : पाम्पेइस ट्रोगस
(d) द हिस्टरीज : हेरोडोटस

7. निम्नलिखित में से किस चीनी यात्री ने चालुक्यों के शासन काल में चीन एवं भारत के संबंधों का विवरण दिया है?
UPPCS (Mains) 2014
(a) फाह्यान (b) ह्वेनसांग
(c) इंत्सिग (d) मात्वालिन

8. हर्ष ने निम्नलिखित में से किन रचनाओं का लेखन किया था?
UP (RO/ARO) Pre 2014
1. प्रियदर्शिका 2. नागानंद
3. हर्षचरित 4. रत्नावली
नीचे दिये गए कूट का उपयोग कर अपना उत्तर दीजिये।
(a) 1, 2, 3 और 4 (b) 1, 2 और 4
(c) 1, 2, और 3 (d) 2 और 3

9. चीनी लेखक भारत का उल्लेख किस नाम से करते हैं?
UPPCS (Pre) 2013
(a) फो-क्वो-की (b) यिन-तु
(c) सि-यू-की (d) सिकिया-पोनो

10. निम्नलिखित युग्मों में से कौन सही सुमेलित नहीं है?
UPPCS (Mains) 2012
(a) कर्पूरमंजरी : हर्ष
(b) मालविकाग्निमित्र : कालिदास
(c) मुद्राराक्षस : विशाखदत्त
(d) सौंदरानंद : अश्वघोष

उत्तरमाला

1. (c) 2. (c) 3. (c) 4. (d) 5. (a) 6. (b) 7. (d) 8. (b) 9. (b) 10. (a)

अध्याय
2

पाषाणयुगीन संस्कृति (Stone Age Culture)

2.1 पुरापाषाण काल *(Palaeolithic Age)*

पुरापाषाण संस्कृति का उदय अतिनूतन (Pleistocene) युग में हुआ था। इस युग में धरती बर्फ से ढँकी हुई थी। भारतीय पुरापाषाण काल को मानव द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाले पत्थर के औज़ारों के स्वरूप और जलवायु में होने वाले परिवर्तन के आधार पर तीन अवस्थाओं में बाँटा जाता है–

(क) निम्न पुरापाषाण काल : (5,00,000 ई. पू. से 50,000 ई. पू. के मध्य)

(ख) मध्य पुरापाषाण काल : (50,000 ई. पू. से 40,000 ई. पू. के मध्य)

(ग) उच्च पुरापाषाण काल : (40,000 ई. पू. से 10,000 ई. पू. के मध्य)

अपवादस्वरूप दक्कन के पठार में मध्य पुरापाषाण काल और उच्च पुरापाषाण काल दोनों के औज़ार मिलते हैं।

प्राचीन भारतीय इतिहास का विकास चार्ट

प्राचीन भारत का इतिहास

प्रागैतिहासिक काल लक्षण:
- लिखित साक्ष्य उपलब्ध नहीं।
- पुरातात्विक साक्ष्य उपलब्ध।
- उदाहरण: पाषाण काल

आद्य ऐतिहासिक काल लक्षण:
- लिखित साक्ष्य उपलब्ध।
- लेकिन लिपि गूढ़ एवं अपठनीय।
- उदाहरण: सैंधव सभ्यता

ऐतिहासिक काल लक्षण:
- पुरातात्विक एवं साहित्यिक दोनों साक्ष्यों के आधार पर निर्धारण।

पुरापाषाण काल
(समयावधि: 5 लाख ई.पू. से 10 हज़ार ई.पू. तक)

मध्यपाषाण काल
(समयावधि: 9 हज़ार ई.पू. से 4 हज़ार ई.पू. तक)

नवपाषाण काल
(समयावधि: 7 हज़ार ई.पू. से 1 हज़ार ई.पू. तक)

निम्नपुरापाषाण काल
(500000 ई.पू.–50000 ई.पू.)

मध्यपुरापाषाण काल
(50000 ई.पू.–40000 ई.पू.)

उच्च पुरापाषाणकाल
(40000 ई.पू.–10000 ई.पू.)

पुरापाषाण काल के औज़ार *(Palaeolithic Tools)*

काल	औज़ार (मुख्य)
निम्न पुरापाषाण काल	हाथ की कुल्हाड़ी, तक्षणी, काटने का औज़ार
मध्य पुरापाषाण काल	काटने वाले औज़ार (फलक, वेधनी, खुरचनी)
उच्च पुरापाषाण काल	तक्षणी और खुरचनी

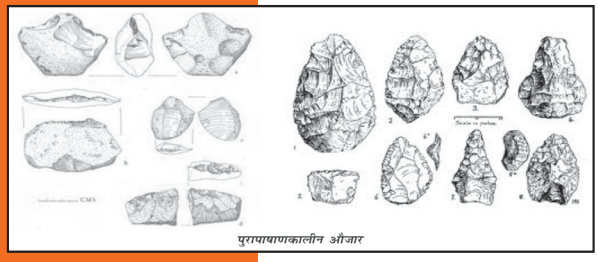

पुरापाषाणकालीन औज़ार

अध्याय
3

सिंधु घाटी सभ्यता
(Indus Valley Civilization)

सिंधु घाटी की सभ्यता का उद्भव ताम्रपाषाण काल में भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर क्षेत्र में हुआ था, जो वर्तमान में भारत, पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के कुछ क्षेत्रों में अवस्थित है। इस काल की सभी संस्कृतियों में सैंधव सभ्यता सबसे विकसित, विस्तृत और उन्नत अवस्था में थी। इसे हड़प्पा सभ्यता (Harappan Civilization) भी कहते हैं क्योंकि सर्वप्रथम 1921 ई. में हड़प्पा नामक स्थान से ही इस संस्कृति के संबंध में जानकारी मिली थी। सैंधव सभ्यता अनुकूलता के मध्य उत्पन्न हुई थी जिसका ज्ञान उत्खनन एवं अनुसंधान द्वारा होता है। सैंधव सभ्यता एक नगरीय सभ्यता थी, क्योंकि इसके पुरातत्त्विक अवशेषों से परिवहन, व्यापार, तकनीकी, उत्पादन एवं नियोजित नगर व्यवस्था के तत्त्व प्राप्त होते हैं।

3.1 सैंधव सभ्यता का भौगोलिक विस्तार
(Geographical Expansion of Indus Civilization)

सैंधव सभ्यता का भौगोलिक विस्तार उत्तर में कश्मीर (मांडा) से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी तक तथा पश्चिम में सुत्कागेंडोर से लेकर पूर्व में आलमगीरपुर (मेरठ) तक था। सैंधव सभ्यता के अंतर्गत भारत के गुजरात, राजस्थान, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश का कुछ भाग, पाकिस्तान का सिंध, पंजाब तथा बलूचिस्तान और अफगानिस्तान के कुछ भाग शामिल हैं।

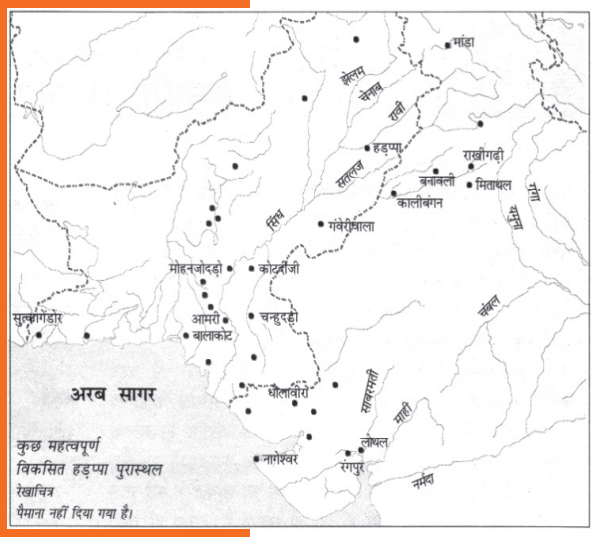

इसके क्षेत्र विस्तार से पता चलता है कि यह सभ्यता बहुत बड़े भाग पर फैली हुई थी। मिस्र तथा मेसोपोटामिया की सभ्यताओं से यह अधिक विस्तृत थी जो कि सैंधव सभ्यता की समकालिक थी।

यह उत्तर से दक्षिण 1100 किलोमीटर तक तथा पूर्व से पश्चिम 1600 किमी. तक फैली हुई थी। उत्खनन तथा अनुसंधान द्वारा अभी तक सैंधव संस्कृति के लगभग 2800 स्थल ज्ञात किये गए हैं जिनमें सैंधव सभ्यता की तीनों अवस्थाएँ मिलती हैं। इनका कालानुक्रम विभाजन इस प्रकार है–

1. आरंभिक हड़प्पा सभ्यता (3500 ई.पू.–2350 ई.पू.)
2. परिपक्व हड़प्पा सभ्यता (2350 ई.पू.–1750 ई.पू.)
3. उत्तर हड़प्पा सभ्यता (1750 ई.पू. से आगे)

सैंधव सभ्यता का स्वरूप *(Perspective of Indus Civilization)*

सैंधव सभ्यता एक विस्तृत भू-भाग पर फैली थी जिसमें सिंध, पंजाब तथा घग्घर नदी के क्षेत्र प्रमुख थे। अधिकांश सैंधव बस्तियाँ इसी क्षेत्र में थीं। इन क्षेत्रों में समरूपता पाई जाती है। सभ्यता का स्वरूप पूर्णतः विकसित व नगरीय था। व्यवसाय, परिवहन के साधन, पशुपालन, तकनीकी तथा उत्पादन प्रणाली इस सभ्यता की उन्नतता के परिचायक हैं। सैंधव सभ्यता की पूर्वी सीमाओं पर स्थित आलमगीरपुर और बड़गाँव जैसी बस्तियों में जीवन निर्वाह की व्यवस्था अनुकूल थी जबकि सोत्काकोह, सुत्कागेंडोर जैसी बस्तियों में पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण शुष्कता थी। गुजरात के लोथल और रंगपुर जैसे स्थलों में पठार और असमतल भूमि थी। सैंधव सभ्यता का परिपक्व स्वरूप इसके प्रमुख नगरों-हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, चन्हूदड़ो, लोथल और बनावली इत्यादि से प्राप्त होता है।

अध्याय
4

वैदिक काल (Vedic Age)

सिंधु घाटी सभ्यता (Indus Valley Civilization) के पश्चात् भारत में जिस नवीन सभ्यता का विकास हुआ उसे ही आर्य (Aryan) अथवा वैदिक सभ्यता (Vedic Civilization) के नाम से जाना जाता है। इस काल की जानकारी हमें मुख्यत: वेदों से प्राप्त होती है, जिसमें ऋग्वेद सर्वप्राचीन होने के कारण सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। वैदिक काल को ऋग्वैदिक या पूर्व वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.) तथा उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई.पू.) में बाँटा गया है।

4.1 ऋग्वैदिक काल : 1500-1000 ई.पू. *(Rigvedic Age : 1500–1000 BC)*

जानकारी के स्रोत *(Source of Knowledge)*

भारत में आर्यों (Aryans) के आरंभिक इतिहास के संबंध में जानकारी का प्रमुख स्रोत वैदिक साहित्य है। इस साहित्य के अलावा वैदिक युग (Vedic Age) के बारे में जानकारी का एक अन्य स्रोत पुरातात्त्विक साक्ष्य (Archaeological Evidences) हैं, लेकिन ये अपनी कतिपय त्रुटियों के कारण किसी स्वतंत्र अथवा निर्विवाद जानकारी का स्रोत न होकर साहित्यिक स्रोतों के आधार पर किये गए विश्लेषण की पुष्टि मात्र करते हैं।

साहित्यिक स्रोत *(Literary Sources)*

ऋग्वेद (Rigveda) वैदिक काल की रचना है। इसमें 10 मंडल (Divisions) तथा 1028 सूक्त (Hymns) हैं। इसे 'स्रोत्रों का संकलन' भी कहा जाता है। इसकी रचना 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू. के मध्य हुई। इसके कुल 10 मंडलों में से दूसरे से सातवें तक के मंडल सबसे प्राचीन माने जाते हैं, जबकि प्रथम तथा दसवाँ मंडल परवर्ती काल के माने गए हैं। ऋग्वेद के दूसरे से सातवें मंडल को गोत्र मंडल (Clan Division) के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इन मंडलों की रचना किसी गोत्र (Clan) विशेष से संबंधित एक ही ऋषि (Sage) के परिवार ने की थी। ऋग्वेद की अनेक बातें फारसी भाषा के प्राचीनतम् ग्रंथ अवेस्ता (ईरान क्षेत्र से संबंधित) से भी मिलती हैं। गौरतलब है कि इन दोनों धर्म ग्रंथों में बहुत से देवी-देवताओं और सामाजिक वर्गों के नाम भी मिलते-जुलते हैं।

मंडल	रचयिता
प्रथम मंडल	अनेक ऋषि
द्वितीय मंडल	गृहत्समद
तृतीय मंडल	विश्वामित्र
चतुर्थ मंडल	वामदेव
पंचम मंडल	अत्रि
षष्ठ मंडल	भारद्वाज
सप्तम मंडल	वशिष्ठ
अष्टम मंडल	कण्व एवं अंगिरस
नवम मंडल	अनेक ऋषि
दसवाँ मंडल	अनेक ऋषि

पुरातात्त्विक स्रोत *(Archaeological Sources)*

1. **कस्सी अभिलेख (1600 ई.पू.):** इन अभिलेखों से यह जानकारी मिलती है कि ईरानी आर्यों (Iranian Aryans) की एक शाखा का भारत आगमन हुआ।
2. **बोगजकोई (मितन्नी) अभिलेख (1400 ई.पू.):** इन अभिलेखों में हित्ती राजा सुब्बिलिमा और मितन्नी राजा मतिऊअजा के मध्य हुई संधि के साक्षी के रूप में वैदिक देवताओं- इंद्र, वरुण, मित्र, नासत्य आदि का उल्लेख है।
3. चित्रित धूसर मृदभांड (Painted Grey Wares – P.G.W.)।
4. उत्तर भारत में हरियाणा के पास भगवानपुरा में हुई खुदाई में एक 13 कमरों का मकान तथा पंजाब में तीन ऐसे स्थान मिले हैं जिनका संबंध ऋग्वैदिककाल से माना जाता है।

अध्याय
5

छठी शताब्दी ई.पू. का भारत
(India in the Sixth Century B.C.)

छठी शताब्दी ई.पू. की सामाजिक-धार्मिक क्रांति के आधारभूत कारण उत्तर वैदिक काल में निर्मित होने लगे थे। उत्तर वैदिक काल में धर्म के कर्मकांडीय स्वरूप तथा ऋग्वेद के दसवें मंडल के पुरुष सूक्त के वर्ण विभाजन ने सामाजिक श्रेष्ठता और आर्थिक शोषण को बढ़ावा दिया। कर्मकांड व जटिल वर्ण व्यवस्था के कारण समाज के वर्गों में उद्वेलन होने लगा जिसके कारण समाज में असंतोष व्याप्त था। छठी शताब्दी ई.पू. के उत्तरोत्तर काल में अनेक धार्मिक संप्रदायों का उत्थान हुआ तथा परंपरागत वैदिक धर्म एवं समाज में व्याप्त बुराइयों, पाखंडों, कुप्रथाओं, छुआछूत, ऊँच-नीच आदि का विरोध किया गया। इन कर्मकांडों के विरोध में सशक्त आवाज़ उपनिषद् काल में व्यक्त हुई तथा आगे चलकर इसी के आधार पर छठी शताब्दी ई.पू. के सामाजिक-धार्मिक आंदोलन की पृष्ठभूमि निर्मित हुई।

5.1 सामाजिक-धार्मिक आंदोलन के कारण
(Causes Behind Socio-Religious Movement)

उत्तर वैदिक काल में वर्णों का स्पष्ट विभाजन हो चुका था। समाज में वर्ण व्यवस्था पर आधारित कर्म प्रचलित होने लगे थे। वर्ण व्यवस्था में ब्राह्मण तथा क्षत्रिय को उच्च वर्ण का माना जाता था और इन्हें नीचे के दोनों वर्णों पर शासन का अधिकार प्राप्त था। ब्राह्मण जिन्हें वर्ण व्यवस्था में सबसे ऊँचा स्थान प्राप्त था, इन्हें पुरोहित तथा धर्म-विषयक शिक्षा का कार्य दिया गया था तथा इनके भरण-पोषण का दायित्व नीचे के वर्णों पर था। वर्ण व्यवस्था में दूसरे क्रम पर क्षात्र वर्ण अर्थात् क्षत्रिय आते थे। इनका कार्य शासन करना और जनता तथा क्षेत्र की रक्षा के लिये युद्ध करना था। क्षत्रियों के बाद वर्ण व्यवस्था के क्रम में वैश्य आते थे, जिन्हें ब्राह्मण तथा क्षत्रिय के साथ संयुक्त रूप से द्विज कहा जाता था और इन्हें उपनयन कराने और वेद-पाठ का अधिकार था। मुख्य करदाता वैश्य ही थे। वैश्य वर्ण को कृषि, पशुपालन तथा व्यापार द्वारा धन और अनाज उपजाकर ब्राह्मणों और क्षत्रियों को देना पड़ता था जिससे कि उनमें असंतोष व्याप्त था। वर्ण व्यवस्था के सबसे निचले सोपान पर शूद्र वर्ण आता था। इनके लिये जनेऊ धारण करना तथा वेदों का अध्ययन करना वर्जित था। शूद्रों का मुख्य कार्य ऊपर के तीनों वर्णों की सेवा करना था। उत्तर वैदिक काल में शूद्र गृह-दास, कृषि-दास, मज़दूर और शिल्पकर्मी के रूप में दिखाई देते हैं। इन्हें अस्पृश्य समझा जाता था तथा लोभी और चोर कहा जाता था। इनके लिये कठोर दंड का प्रावधान था। इन सभी सामाजिक विषमताओं से शूद्रों में अत्यधिक रोष था। उत्तर वैदिक काल के उत्तरवर्ती चरण में महिलाओं की स्थिति भी शूद्रों की तरह हो गई। इन्हें वेद पढ़ने तथा जनेऊ धारण करने से वंचित कर दिया गया। महिलाओं को पुरुषों की तुलना में हेय समझा जाता था। संपत्ति का अधिकार भी उन्हें प्राप्त नहीं था। इस प्रकार की शोषणकारी व्यवस्था के कारण स्त्रियों में असंतोष व्याप्त था।

साथ ही साथ बिहार व पूर्वी उत्तर प्रदेश के क्षेत्रों में ढलवाँ लोहा तथा धान रोपण की तकनीक ने कृषि उत्पादन में अधिशेष को बढ़ाया। लोहे के प्रयोग के परिणामस्वरूप मध्य गंगा के क्षेत्रों में अत्यधिक संख्या में लोग बसने लगे जिससे नगरों का निर्माण प्रारंभ हो गया तथा इन नगरों में निवास करने वालों, जो धन की दृष्टि से संपन्न वैश्य तथा शूद्र वर्ण के लोग थे, ने वर्ण व्यवस्था के सोपान में अपने निचले क्रम तथा जटिल कर्मकांडों को मानने से इनकार कर दिया। मध्य गंगा के मैदानों में जब कृषि का प्रचलन बढ़ने लगा तो पशुओं का महत्त्व भी बढ़ने लगा जबकि धार्मिक क्रियाकलापों तथा यज्ञों में पशुओं की बलि बड़े पैमाने पर दी जाती थी। इससे पशुओं की संख्या लगातार कम होती जा रही थी जबकि कृषि में पशुओं की आवश्यकता थी जिस कारण इस नई कृषि व्यवस्था के विकास के लिये पशु-बलि पर रोक के लिये भी विद्रोह के स्वर प्रस्फुटित हुए। समकालीन आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियों के कारण छठी शताब्दी ई.पू. में सामाजिक-धार्मिक आंदोलन हुए। संक्षेप में तत्कालीन समाज में ब्राह्मणीय व्यवस्थाओं के विरोध में लोगों के स्वर तीव्र हुए तथा उस समय उदय हुए अनेक नए धर्मों तथा संप्रदायों ने उनमें सुधार के लिये प्रयास किये। विभिन्न धार्मिक संप्रदायों के अलावा जिन दो प्रसिद्ध

अध्याय
6

मौर्य काल
(Mauryan Period)

मौर्य राजवंश तथा उसके शासनकाल के इतिहास की जानकारी हमें साहित्य, विदेशी विवरण एवं पुरातत्त्व तीनों ही साधनों से प्राप्त होती है। इनका विवरण इस प्रकार है–

6.1 अध्ययन के स्रोत *(Source of Study)*

साहित्यिक साक्ष्य *(Literary Evidences)*

ब्राह्मण, बौद्ध तथा जैन साहित्य मौर्य वंश के इतिहास पर प्रकाश डालते हैं। ब्राह्मण साहित्य में पुराण, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, विशाखदत्त का मुद्राराक्षस नाटक आदि प्रमुख हैं। इनमें कौटिल्य के अर्थशास्त्र का ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थान है।

बौद्ध ग्रंथों में दीपवंश, महावंश, महावंश टीका, महाबोधिवंश, दिव्यावदान आदि प्रमुख हैं। इनसे चंद्रगुप्त मौर्य, बिंदुसार, अशोक तथा परवर्ती मौर्य शासकों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

जैन ग्रंथों में भद्रबाहु का कल्पसूत्र तथा हेमचंद्र का परिशिष्टपर्वन प्रमुख हैं जिनसे चंद्रगुप्त मौर्य के जीवन की कुछ घटनाओं के विषय में जानकारी मिलती है।

विदेशी विवरण *(Foreign Descriptions)*

यूनानी-रोमन लेखकों के विवरण से मौर्यकालीन इतिहास एवं संस्कृति के बारे में जानकारी मिलती है। यूनानी लेखकों ने चंद्रगुप्त मौर्य के लिये सेंड्रोकोटस नाम का प्रयोग किया है। सर्वप्रथम विलियम जोंस ने इन नामों का तादात्म्य चंद्रगुप्त के साथ स्थापित किया। चंद्रगुप्त मौर्य सिकंदर का समकालीन था। सिकंदर के समकालीन लेखकों नियार्कस, आनेसिक्रिटस तथा अरिस्टोब्यूलस के विवरण से चंद्रगुप्त मौर्य के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश पड़ता है।

सिकंदर के बाद के लेखकों में मेगास्थनीज का नाम सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है जिसकी पुस्तक 'इंडिका' मौर्य इतिहास का प्रमुख स्रोत है। किंतु यह मूलरूप में प्राप्त नहीं हुई है। इसके कुछ भाग परवर्ती लेखकों के ग्रंथों में प्राप्त होते हैं। इनमें स्ट्रैबो, डियोडोरस, प्लिनी, एरियन, प्लूटार्क तथा जस्टिन के नाम उल्लेखनीय हैं।

पुरातात्त्विक साक्ष्य *(Archaeological Evidences)*

मौर्यकालीन पुरातात्त्विक साक्ष्यों में अशोक के अभिलेखों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अशोक के लगभग 40 अभिलेख भारत, पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के विभिन्न भागों से प्राप्त हुए हैं। वस्तुतः इन अभिलेखों से हम अशोक के शासन की प्रायः समस्त घटनाओं का प्रामाणिक विवरण प्राप्त कर सकते हैं।

अशोक के अभिलेखों के अतिरिक्त शक महाक्षत्रप रुद्रदामन का जूनागढ़(गिरनार) लेख भी मौर्य इतिहास के विषय में जानकारी प्रदान करता है। इससे सौराष्ट्र प्रांत में मौर्य शासन की जानकारी प्राप्त होती है।

6.2 चंद्रगुप्त मौर्य एवं बिंदुसार *(Chandra Gupta Maurya and Bindusara)*

चंद्रगुप्त मौर्य *(Chandra Gupta Maurya)*

मौर्य राजवंश की स्थापना चंद्रगुप्त मौर्य ने की। चंद्रगुप्त ने नंद वंश के अंतिम राजा धनानंद को अपदस्थ कर राजधानी पाटलिपुत्र पर अधिकार जमाया और 322 ई.पू. में मगध के राज सिंहासन पर बैठा। चंद्रगुप्त के वंश और जाति के संबंध में विद्वान एकमत नहीं हैं। कुछ विद्वानों ने ब्राह्मण ग्रंथों, मुद्राराक्षस, विष्णुपुराण आदि के आधार पर चंद्रगुप्त को शूद्र माना है।

अध्याय
7

मौर्योत्तर काल
(Post-Mauryan Period)

मौर्य साम्राज्य के पतन के साथ ही भारतीय इतिहास की राजनीतिक एकता कुछ समय के लिये विखंडित हो गई। अब ऐसा कोई राजवंश नहीं था जो हिंदुकुश से लेकर कर्नाटक एवं बंगाल तक आधिपत्य स्थापित कर सके। दक्षिण में स्थानीय शासक स्वतंत्र हो उठे। मगध का स्थान साकल, प्रतिष्ठान, विदिशा आदि कई नगरों ने ले लिया।

7.1 मौर्योत्तरकालीन प्रमुख राजवंश
(Major Dynasty of Post Mauryan Period)

शुंग वंश *(185 ईसा पूर्व से 75 ईसा पूर्व) [(Sunga Dynasty (185 BC–75BC)]*

अन्तिम मौर्य शासक बृहद्रथ की हत्या कर पुष्यमित्र शुंग ने जिस नवीन राजवंश की नींव डाली, वह शुंग वंश के नाम से जाना जाता है। शुंग वंश के इतिहास के बारे में जानकारी साहित्यिक एवं पुरातात्विक दोनों साक्ष्यों से प्राप्त होती है, जिनका विवरण निम्नलिखित है–

साहित्यिक स्रोत

- पुराण (वायु और मत्स्य पुराण) – इससे पता चलता है कि शुंगवंश का संस्थापक पुष्यमित्र शुंग था।
- हर्षचरित – इसकी रचना बाणभट्ट ने की थी। इसमें अंतिम मौर्य शासक बृहद्रथ की चर्चा है।
- पतंजलि का महाभाष्य – पतंजलि पुष्यमित्र शुंग के पुरोहित थे। इस ग्रंथ में यवनों के आक्रमण की चर्चा है।
- गार्गी संहिता – इसमें भी यवन आक्रमण का उल्लेख मिलता है।
- मालविकाग्निमित्रम – यह कालिदास का नाटक है जिससे शुंगकालीन राजनीतिक गतिविधियों का ज्ञान प्राप्त होता है।
- दिव्यावदान – इसमें पुष्यमित्र शुंग को अशोक के 84,000 स्तूपों को तोड़नेवाला बताया गया है।

पुरातात्विक स्रोत

- अयोध्या अभिलेख – इस अभिलेख को पुष्यमित्र शुंग के उत्तराधिकारी धनदेव ने लिखवाया था। इसमें पुष्यमित्र शुंग द्वारा कराए गए दो अश्वमेध यज्ञों की चर्चा है।
- बेसनगर का अभिलेख – यह यवन राजदूत हेलियोडोरस का है जो गरुड़-स्तंभ के ऊपर खुदा हुआ है। इससे भागवत् धर्म की लोकप्रियता सूचित होती है।
- भरहुत का लेख – इससे भी शुंगकाल के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

उपर्युक्त साक्ष्यों के अतिरिक्त साँची, बेसनगर, बोधगया आदि स्थानों से प्राप्त स्तूप एवं स्मारक शुंगकालीन कला एवं स्थापत्य की विशिष्टता का ज्ञान कराते हैं। शुंगकाल की कुछ मुद्राएँ-कौशाम्बी, अहिच्छत्र, अयोध्या तथा मथुरा से प्राप्त हुई हैं जिनसे तत्कालीन ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है।

पुष्यमित्र शुंग (Pusyamitra Sunga)

पुष्यमित्र, मौर्य वंश के अन्तिम शासक बृहद्रथ का सेनापति था। इसके प्रारंभिक जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त नहीं है। पुष्यमित्र शुंग ने दो अश्वमेध यज्ञ किये जिसे प्राचीन भारत में राजसत्ता का प्रतीक माना गया था। परवर्ती मौर्यों के कमज़ोर शासन में मगध का प्रशासन तंत्र शिथिल पड़ गया था तथा देश को आंतरिक एवं बाह्य संकटों का खतरा था। इसी समय

अध्याय
8

संगम काल
(Sangam Age)

ऐतिहासिक युग के प्रारंभ में दक्षिण भारत का क्रमबद्ध इतिहास हमें संगम साहित्य से प्राप्त होता है। इसके पूर्व का कोई महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथ हमें दक्षिण भारत से प्राप्त नहीं होता है। इस प्रकार सुदूर दक्षिण के प्रारंभिक इतिहास का मुख्य स्रोत संगम साहित्य ही है। 'संगम' शब्द से अभिप्राय परिषद् अथवा गोष्ठी से है, जिसमें तमिल कवि एवं विद्वान एकत्रित होते थे। प्रत्येक कवि अथवा लेखक अपनी रचनाओं को संगम के सामने प्रस्तुत करते थे तथा उसकी स्वीकृति के बाद ही किसी भी रचना का प्रकाशन संभव हो पाता था। अति प्राचीन समय में पाण्ड्य राजाओं के संरक्षण में कुल तीन संगम आयोजित किये गए। इनमें संकलित साहित्य को ही 'संगम साहित्य' की संज्ञा प्रदान की जाती है। इन संगमों के विवरण इस प्रकार हैं–

प्रथम संगम *(First Sangam)*

प्रथम संगम पाण्ड्य राजाओं की राजधानी मदुरै में आयोजित किया गया था जिसके अध्यक्ष अगस्त्य ऋषि थे। अगस्त्य ऋषि ने ही दक्षिण में वैदिक संस्कृति एवं सभ्यता का प्रचार-प्रसार किया था। ऐसा माना जाता है कि इस संगम में सदस्यों की कुल संख्या 549 थी। इस संगम में 4499 लेखकों ने अपनी रचनाओं की प्रस्तुति की तथा उन्हें प्रकाशित करवाने की आज्ञा प्राप्त की। यह संगम 89 पाण्ड्य राजाओं के संरक्षण में हुआ जो चार हज़ार चार सौ वर्षों तक चला। प्रथम संगम में जिन ग्रंथों का संकलन हुआ, उनमें से कोई भी उपलब्ध नहीं है।

द्वितीय संगम *(Second Sangam)*

द्वितीय संगम कपाटपुरम् में आयोजित किया गया तथा इस संगम की भी अध्यक्षता अगस्त्य ऋषि ने की थी। इस संगम में 3700 रचनाकारों ने अपनी रचनाओं को प्रकाशित करवाने की आज्ञा प्राप्त की। यह संगम भी अत्यधिक लंबी अवधि तक चला जिसे 59 पाण्ड्य राजाओं द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया। इस संगम में संकलित साहित्यों में तमिल व्याकरण ग्रंथ 'तोल्लकाप्पियम' ही एकमात्र शेष है, जिसकी रचना का श्रेय अगस्त्य ऋषि के शिष्य तोल्काप्पियर को दिया जाता है।

तृतीय संगम *(Third Sangam)*

इस संगम का आयोजन भी पाण्ड्य राजाओं की राजधानी मदुरै में ही हुआ था। इसकी अध्यक्षता नक्कीरर ने की थी। इस संगम में संकलित की गई कविताएँ वर्तमान में भी उपलब्ध हैं जिनकी संख्या 49 थीं। तृतीय संगम में 449 कवियों को उनकी रचना को प्रकाशित करवाने की आज्ञा मिली। यह संगम 1850 वर्ष तक चलता रहा। जिसे 49 पाण्ड्य शासकों का संरक्षण प्राप्त हुआ। हालाँकि इन ग्रंथों में से अधिकांश नष्ट हो गए हैं। वर्तमान में उपलब्ध तमिल ग्रंथ का संकलन इसी संगम में किया गया था।

8.1 संगम साहित्य *(Sangam Literature)*

संगम साहित्य को मोटे तौर पर तीन भागों में बाँटा जा सकता है–

1. पत्थुप्पात्तु,
2. इत्थुथोकै
3. पदिनेन कीलकन्कु

पत्थुप्पात्तु दस छोटी कविताओं (पदों) का संग्रह है। संभवत: इन पदों को लिखे जाने का समय द्वितीय सदी ईस्वी का है। इनमें पाण्ड्य राजा नेडुंजेलियन और चोल राजा करिकाल के विषय में भी विवरण मिलता है।

इत्थुथोकै आठ कविताओं का संग्रह है। इन कविताओं में संगम काल के राजाओं के नाम और तत्कालीन समाज का विवरण है। ये कविताएँ प्राचीन तमिल साहित्य की उत्कृष्ट कृतियाँ हैं।

अध्याय
9

गुप्त साम्राज्य
(Gupta Empire)

चौथी सदी ई. के प्रारम्भ में भारत में कोई बड़ा संगठित राज्य अस्तित्व में नहीं था। यद्यपि, कुषाण एवं शक शासकों का शासन चौथी सदी ई. के प्रारंभिक वर्षों तक जारी रहा, लेकिन उनकी शक्ति काफी कमज़ोर हो गई थी और सातवाहन वंश का शासन तृतीय शदी ई. के मध्य से पहले ही समाप्त हो गया। ऐसी राजनीतिक स्थिति में गुप्त राजवंश का उदय हुआ। सामान्यत: गुप्त वंश का वास्तविक शासनकाल 319–500 ई. के मध्य पाया जाता है। कुछ अन्य स्रोतों में गुप्त वंश के शासनकाल को 275–550 ई. के मध्य माना गया है।

9.1 गुप्त राजवंश के इतिहास के स्रोत *(Sources of History of Gupta Dynasty)*

गुप्त राजवंश का इतिहास हमें साहित्य, पुरातत्त्व तथा विदेशी यात्रियों के विवरण तीनों से प्राप्त होता है। साहित्यिक स्रोतों में पुराण प्रमुख हैं जिनसे गुप्त वंश के प्रारंभिक इतिहास की जानकारी मिलती है। विशाखदत्त की रचना 'देवीचन्द्रगुप्तम्' से गुप्त शासक रामगुप्त एवं चन्द्रगुप्त द्वितीय के बारे में जानकारी मिलती है। इसके अलावा कालिदास की रचनाएँ तथा शूद्रककृत 'मृच्छकटिकम्' और वात्स्यायनकृत 'कामसूत्र' से भी गुप्त काल की जानकारी प्राप्त होती है।

विदेशी यात्रियों में चीनी यात्री फाह्यान का नाम सर्वप्रमुख है जो चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में भारत आया था। उसने मध्यदेश का वर्णन किया है। इसके अलावा चीनी यात्री ह्वेनसांग के विवरण से भी गुप्त काल की जानकारी प्राप्त होती है। ह्वेनसांग के विवरण से ही पता चलता है कि कुमारगुप्त ने नालंदा महाविहार की स्थापना करवाई थी।

पुरातात्विक स्रोतों में अभिलेखों, सिक्कों तथा स्मारकों से गुप्त राजवंश के इतिहास का ज्ञान होता है। समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तंभलेख से उसके बारे में जानकारी मिलती है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के उदयगिरि गुहालेख से चन्द्रगुप्त द्वितीय के साम्राज्य-विजय का ज्ञान होता है। स्कंदगुप्त के भितरी स्तंभलेख से हूण आक्रमण के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। स्कंदगुप्त के ही जूनागढ़ अभिलेख से इस बात की जानकारी प्राप्त होती है कि उसने सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण करवाया था।

गुप्तकालीन राजाओं के सोने, चांदी तथा तांबे के सिक्के प्राप्त होते हैं। सोने के सिक्कों को दीनार, चांदी के सिक्कों को रूपक अथवा रूप्यक तथा तांबे के सिक्कों को माषक कहा जाता था। इन सिक्कों से तत्कालीन शासकों तथा उस काल की राजनीतिक और आर्थिक दशा की जानकारी प्राप्त होती है।

गुप्तकालीन स्मारकों, जैसे– मंदिर, मूर्तियों, चैत्य-गृहों आदि से तत्कालीन कला और स्थापत्य की जानकारी मिलती है।

9.2 प्रारंभिक शासक *(Early Rulers)*

गुप्त राजवंश का प्रथम शासक श्रीगुप्त था। श्रीगुप्त के बाद उसका पुत्र घटोत्कच गुप्त वंश का दूसरा शासक हुआ। इन दोनों शासकों ने लगभग 319-320 ई. तक शासन किया।

चन्द्रगुप्त प्रथम *(Chandragupta-I)*

घटोत्कच के बाद उसका पुत्र चन्द्रगुप्त प्रथम राजा बना जो गुप्त काल का शक्तिशाली शासक था। लिच्छवियों के साथ मधुर संबंध स्थापित करने तथा उनका सहयोग और समर्थन प्राप्त करने के लिये चन्द्रगुप्त ने लिच्छवि राजकुमारी कुमारदेवी के साथ विवाह किया। इस बात की जानकारी कुछ स्वर्ण-सिक्कों से प्राप्त होती है जिनके मुख भाग पर चन्द्रगुप्त और उसकी रानी कुमारदेवी का चित्र बना हुआ है तथा पृष्ठ भाग पर लिच्छवय: (लिच्छवि) उत्कीर्ण है। 'सिक्का' जारी करने वाला प्रथम गुप्त शासक चंद्रगुप्त प्रथम को ही माना जाता है।

समुद्रगुप्त के प्रयाग अभिलेख में समुद्रगुप्त को 'लिच्छवि दौहित्र' अर्थात् लिच्छवि कन्या से उत्पन्न बताया गया है। चन्द्रगुप्त प्रथम ने ही 'गुप्त-संवत् (319-320 ई.)' चलाया था। चन्द्रगुप्त प्रथम ने लगभग 319 ई. से 335 ई. तक शासन किया तथा समुद्रगुप्त को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया।

अध्याय
10

गुप्तोत्तर काल
(Post Gupta Period)

10.1 प्रमुख राजवंश *(Major Dynasty)*

छठी शताब्दी के मध्य अर्थात् 550 ई. के लगभग गुप्त साम्राज्य विखंडित हो गया। गुप्त साम्राज्य के विखंडन के बाद एक बार पुनः भारतीय राजनीतिक परिदृश्य में विकेंद्रीकरण और विभाजन की प्रवृत्तियाँ सक्रिय हो उठीं। इस काल में अनेक सामंतों एवं शासकों ने अपनी स्वतंत्रता घोषित कर दी और स्वतंत्र राजवंशों की स्थापना की। हर्षवर्धन के उदय होने तक उत्तरी तथा पश्चिमी भारत की राजनीति में अनेक छोटे-छोटे राजवंशों का आविर्भाव हुआ, जिनमें निम्नलिखित प्रमुख थे–

1. बल्लभी के मैत्रक
2. पंजाब के हूण
3. मालवा का यशोधर्मन
4. मगध और मालवा के उत्तरगुप्त
5. कन्नौज के मौखरि

बल्लभी का मैत्रक वंश

इस वंश की स्थापना भट्टार्क नामक व्यक्ति ने की जो गुप्तकाल में एक सैनिक पदाधिकारी था। पाँचवीं शताब्दी के अंत तक भट्टार्क के उत्तराधिकारियों ने सौराष्ट्र (काठियावाड़) में शक्तिशाली राज्य स्थापित करने में सफलता पाई। भट्टार्क के बाद धरसेन शासक हुआ तथा द्रोणसिंह इस वंश का तीसरा शासक हुआ। द्रोणसिंह के बाद उसका भाई ध्रुवसेन राजा बना।

मैत्रकवंशीय राजा बौद्ध धर्म के अनुयायी थे तथा उन्होंने बौद्ध विहारों को पर्याप्त दान दिया। इस समय बल्लभी शिक्षा का प्रमुख केंद्र था। यह एक विश्वविद्यालय था जिसकी पश्चिमी भारत में वही प्रसिद्धि थी जो पूर्वी भारत में नालंदा विश्वविद्यालय की थी। चीनी यात्री इत्सिंग, जो सातवीं शताब्दी में भारत आए थे, ने इस शिक्षा केंद्र की प्रशंसा की है। शिक्षा का प्रसिद्ध केंद्र होने के साथ-साथ बल्लभी व्यापार-वाणिज्य का भी केंद्र था।

पंजाब के हूण

हूण एक खानाबदोश और बर्बर जाति थी जो मध्य एशिया में निवास करती थी। हूणों का पहला भारतीय आक्रमण गुप्त शासक स्कंदगुप्त के शासनकाल में हुआ। वे स्कंदगुप्त के हाथों पराजित हुए और उनका अभियान असफल रहा। हूणों के इस आक्रमण का देश के ऊपर कोई तात्कालिक प्रभाव तो नहीं पड़ा किंतु गुप्त साम्राज्य के पतन में इसने परोक्ष रूप से भूमिका अवश्य निभाई।

स्कंदगुप्त की मृत्यु के बाद तोरमाण के नेतृत्व में हूणों ने गंगा-घाटी पर पुनः आक्रमण किया। मध्य भारत के एरण नामक स्थान से प्राप्त तोरमाण के लेख से इस बात की जानकारी मिलती है कि धन्यविष्णु तारेमाण के शासनकाल में उसका सामंत था। जैन ग्रंथ कुवलयमाला से जानकारी मिलती है कि उसकी राजधानी चंद्रभागा (चिनाब) नदी के तट पर स्थित पवैया में थी।

तोरमाण के नेतृत्व में हूणों ने पवैया, साकल (स्याल कोट), एरण, मालवा आदि में अपनी सत्ता स्थापित की। तोरमाण ने अपनी मृत्यु से पूर्व अपने पुत्र मिहिरकुल को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था।

मिहिरकुल एक क्रूर और अत्याचारी शासक था। ह्वेनसांग के अनुसार उसकी राजधानी साकल थी। ग्वालियर लेख में उसे महान पराक्रमी और 'पृथ्वी का स्वामी' कहा गया है। 530 ई. के आस-पास मिहिरकुल यशोधर्मन द्वारा पराजित हुआ। यह मिहिरकुल की अंतिम पराजय थी और इसके उपरांत हूणों की शक्ति समाप्त हो गई।

मिहिरकुल शैव मतानुयायी तथा बौद्धों का शत्रु था। कल्हण के अनुसार श्रीनगर में मिहिरकुल ने एक शिव मंदिर का निर्माण करवाया था।

अध्याय
11

पूर्व मध्यकालीन भारत (Early Medieval India)

11.1 कन्नौज के लिये त्रिपक्षीय संघर्ष *(The Tripartite Struggle for Kannauj)*

750 और 1000 ईस्वी के मध्य उत्तर भारत और दक्षिण भारत में कई शक्तिशाली साम्राज्यों का उदय हुआ। इनमें से तीन वंश ऐसे थे, जिन्होंने आपस में संघर्ष किया। यह संघर्ष कन्नौज पर आधिपत्य के लिये हुआ। इनमें से एक था पाल वंश, जिसका नवीं सदी के मध्य तक पूर्वी भारत में एक शक्तिशाली राज्य था। पश्चिमी भारत और उत्तरी गंगा की घाटी में दसवीं सदी तक प्रतिहार राजवंश का प्रभुत्व था। उधर दक्षिण भारत में राष्ट्रकूटों का वर्चस्व था, जो समय-समय पर उत्तर भारत के प्रदेशों पर भी अपना आधिपत्य स्थापित कर लेते थे। वस्तुतः इन तीनों शक्तिशाली साम्राज्यों के मध्य संघर्ष चलता रहा। यद्यपि इन साम्राज्यों के शासकों ने काफी बड़े-बड़े क्षेत्रों में शांति स्थापित की एवं साहित्य तथा कला को संरक्षण दिया। इन तीनों में सबसे अंत तक शासन राष्ट्रकूट वंश ने किया। वह न केवल उस काल का सबसे शक्तिशाली साम्राज्य था, बल्कि उसने आर्थिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में उत्तर और दक्षिण भारत के मध्य सेतु का भी काम किया।

सातवीं सदी के पूर्वार्द्ध से ही कन्नौज भारत की राजनीति का केंद्र बिंदु रहा था। उस काल में उत्तरी भारत पर आधिपत्य का कोई भी दावा कन्नौज पर अधिकार के बिना निरर्थक था। कन्नौज तथा उसके मध्यदेश का सामरिक महत्त्व भी था, क्योंकि पालों के लिये मध्य भारत तथा पंजाब और प्रतिहारों एवं राष्ट्रकूटों के लिये गंगा दोआब में पहुँचने के मार्ग पर कन्नौज से ही नियंत्रण होता था। इसके अतिरिक्त गंगा-यमुना दोआब, जो प्रचुर मात्रा में राजस्व का स्रोत था। अतः इस पर बिना नियंत्रण किये कोई भी साम्राज्य शक्तिशाली नहीं हो सकता था।

त्रिपक्षीय संघर्ष के चरण *(Phases of Tripartite Struggle)*

कन्नौज पर अधिकार के लिये 8वीं सदी के मध्य से आरंभ हुए राष्ट्रकूट, पाल तथा गुर्जर-प्रतिहार राजवंश के मध्य के युद्ध को त्रिपक्षीय संघर्ष के नाम से जाना जाता है।

प्रतिहार शासक वत्सराज द्वारा कन्नौज पर आक्रमण के साथ ही संघर्ष की शुरुआत हुई। कन्नौज का शासक, इंद्रायुध पराजित हुआ तथा उसने वत्सराज का आधिपत्य स्वीकार कर लिया। प्रतिहार गंगा-यमुना के संगम तक पहुँच गए थे और पालों (बंगाल के शासक) का प्रभाव प्रयाग तक बढ़ गया था। परिणामस्वरूप युद्ध अवश्यंभावी हो गया। प्रतिहार नरेश वत्सराज एवं पाल नरेश धर्मपाल के मध्य उत्तर भारत पर विस्तार के लिये संघर्ष आरंभ हो गया। राष्ट्रकूट नरेश ध्रुव ने इस संघर्ष में हस्तक्षेप किया एवं सबसे पहले वत्सराज को पराजित किया। त्रिपक्षीय संघर्ष में राष्ट्रकूट ही दक्षिण भारत की ऐसी पहली शक्ति थी, जिसने उत्तर भारत की राजनीति में हस्तक्षेप किया तथा दक्षिण से उत्तर भारत पर आक्रमण किया। संभवतः धर्मपाल ने भी ध्रुव का आधिपत्य स्वीकार कर लिया। फिर ध्रुव दक्षिण को लौट गया। इन घटनाओं से अंततः धर्मपाल लाभान्वित हुआ। धर्मपाल ने इन घटनाओं का लाभ उठाते हुए कन्नौज पर आक्रमण कर इंद्रायुध को अपदस्थ कर दिया तथा उसकी जगह चक्रायुध को कन्नौज का शासक नियुक्त किया। चक्रायुध ने धर्मपाल का आधिपत्य स्वीकार कर लिया तथा धर्मपाल ने 'उत्तरापथस्वामिन्' की उपाधि धारण की। हालाँकि इन घटनाओं के बारे में स्पष्ट तिथि का अभाव है।

त्रिपक्षीय संघर्ष के द्वितीय चरण में दो शक्तियाँ ही विद्यमान हुईं। बंगाल का धर्मपाल और गुर्जर–प्रतिहारों का वत्सराज। कन्नौज क्षेत्र में इस समय आयुध वंश के दोनों भाई इंद्रायुध और चक्रायुध आपस में संघर्षरत थे। कन्नौज नरेश चक्रायुध को पाल नरेश के संरक्षण के कारण स्वामित्व प्राप्त हुआ था।

त्रिपक्षीय संघर्ष का तृतीय चरण तब प्रारम्भ हुआ, जब प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय ने 806-07 ई. के आस–पास कन्नौज पर आक्रमण किया तथा चक्रायुध और धर्मपाल को पराजित कर 810 ई. में कन्नौज को अपनी राजधानी बना लिया। धर्मपाल अब राष्ट्रकूट राजा गोविन्द तृतीय से मिल गया तथा गोविन्द तृतीय ने कन्नौज पर आक्रमण किया तथा नागभट्ट द्वितीय को पराजित किया। इसके पश्चात् गोविंद तृतीय दक्षिण वापस चला गया। प्रतिहारों और पालों की प्रतिद्वंद्विता पुनः प्रारंभ हो गई, जिसमें पालों का पक्ष मजबूत था।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456